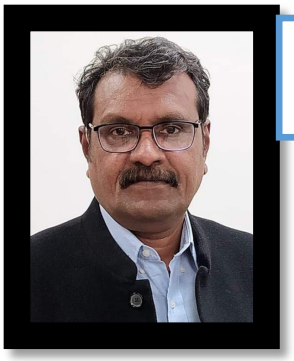


# राम नगीना मौर्य

लखनऊ
उत्तर प्रदेश


## सबाऊन

"अदना सा ही तो है/ये इन्सान/पर चाहे तो तबाह कर दे/इस धरती को/कई-कई बार/मगर करता नहीं/मोहब्बत जो करता है/अपनी धरती से/क्या नहीं...?" सबा के अब्बू कामरान बेग एक स्कूल में हिन्दी के अध्यापक थे, तो उसकी अम्मी इस्मत बेगम घरेलू महिला। कामरान बेग, हाल ही में लिखी अपनी कविता "अपनी धरती" के रदीफ-काफिया दुरुस्त करने में मशगूल थे कि उनकी पत्नी इस्मत बेगम ने ड्राइंग-रूम में आकर टी. वी. का बटन ऑन कर दिया। फिर से युद्ध-स्थल के वही विचलित कर देने वाले खौफनाक दृश्य, दिल दहला देने वाली खबरों ने उनका ध्यान भंग किया।

टी. वी. पर दिखाई जा रही युद्ध सम्बन्धी खबरों के बीच, बम धमाकों, राकेट, मिसाइलों के दागे जाने, रह-रह कर आ रहे सायरनों की आवाजों से दहशत का सा माहौल बना हुआ था। इन हवाई और टैंकों के हमलों से जान-माल का कितना नुकसान हो गया या हो रहा है, कितने ही लोग युद्धग्रस्त देश को छोड़कर शरणार्थियों के मानिन्द पड़ोसी मुल्कों में पनाह वास्ते पलायन कर गये, इसकी कोई पुख्ता जानकारी नहीं मिल पा रही थी।

युद्धरत देश, एक दूसरे के विरुद्ध साम-दाम-दण्ड-भेद सभी तरीके आजमा रहे थे। युद्धग्रस्त क्षेत्रों में नागरिकों, विदेशियों, छात्रों आदि के फंसे होने, नागरिकों के हताहत होने की खबरें भी टी. वी. पर लगातार आ रही थीं। युद्ध के लिए जाते परिवारीजनों से विदा लेते, सैनिकों की तस्वीरें तो विचलित कर देने वाली थीं। समय-समय पर युद्ध की भयावहता, इससे पड़ने वाले दुष्प्रभावों आदि के बारे में विभिन्न चैनल्स पर परिचर्चाएं भी देखने-सुनने को

मिल रहीं थीं।

"हे परवरदिगार! पता नहीं सबा बिटिया कैसी और किस हाल में होगी? इधर बीच तीन दिन हो गये, उससे बात नहीं हो पायी। ये जंग कब बन्द होगी? जाने कितनों ने अपनी जानें गंवाई, कितने अभी भी संघर्ष कर रहे हैं? ऐसे समय में जब दुनिया के लगभग सभी देश किन्हीं-न-किन्हीं कारणों से एक-दूसरे पर निर्भर हैं, ऐसी जंग तो इंसानियत के लिए अभिशाप सरीखी ही है।" इस्मत बेगम बड़बड़ाती जा रही थीं।

"अंततः जब कोई मसला आपसी बातचीत से ही सुलझना है, तो जंग की नौबत ही नहीं आनी चाहिए। पता नहीं हम इंसान जिन्दगी की इन तल्ख हकीकतों को कब समझेंगे? यहां परेशानकुन बातें तो ये भी हैं कि हमारी दुनिया में तमाम तरह की बिन बुलायी आपदाएं, चुनौतियां क्या कम हैं, जो ये नफरती रवैया, जंग जैसी त्रासदी को बुलाने पर हम इंसान आमादा हो गये हैं? अभी कुछ समय पहले पढ़ी कथाकार 'हृदयेश जी' की कहानी 'कुछ भी नहीं बचेगा एक दिन इस पृथ्वी पर' की बरबस ही याद आ रही है।" कामरान बेग ने भी अपनी बेगम के साथ मौजूदा हालात पर चिन्ता जताई।

"सही कह रहे हैं। इस धरती ने दो-दो विश्वयुद्ध देखे। शीत युद्ध का दौर देखा। हिरोशिमा, नागासाकी में हुई व्यापक जन-धन की तबाही को भला कौन भूल सकता है? जंग के विनाशकारी स्वरूप को दर्शाने वास्ते 'पाब्लो पिकासो' द्वारा बनाए गए प्रतीकात्मक छायाचित्र 'गुएर्निका' को भला कौन भूल सकता है? जंग की विभीषिका पर तो जाने कितनी फिल्में बनी हैं, कहानियां, कविताएं, संस्मरण आदि लिखे गए हैं। जिनका संदेश लब्बे-लुबाब यही रहता है कि जंग अपने आप में ही त्रासदी है। मानव-कल्याण का संदेश देने वालों ने जंग की क्रूरता पर दुनिया को हमेशा ही जागरूक किया, हिंसा का विरोध किया। इन्हें टालकर, रोककर ही दुनिया को खूबसूरत बनाया जा सकता है। जंग के खिलाफ में आज भी बहुत कुछ लिखा जा रहा है। ताकि हम इतिहास से सबक ले सकें, और दुनिया को बेहतर बनाने में मददगार बन सकें। जंग तो इन्हें बदसूरत

बनाते हैं। पर क्या हम इंसान ऐसा कर पा रहे हैं...? मानीखेज तो ये है।" इस्मत बेगम ने टी. वी. के वॉल्यूम को तनिक कम करते हुए कहा।

"हमने अपने बाप-दादाओं से, जो बड़े -बड़े जंग के गवाह रहे, उनसे जंग की विभीषिका के बारे में बहुत कुछ सुना है। आज की तारीख में कोई भी देश जंग नहीं चाहता, क्योंकि इसमें भले ही कोई ताकतवर देश जीत जाये, लेकिन अंततः हारेगी तो इंसानियत ही। जंग का इतिहास खंगालें तो यही मालूम होगा कि इसने दुनिया को बहुत तकलीफें दी। लाखों जिन्दगियां तबाह हुईं। इसकी वजह से हम तरक्की में वर्षों पिछड़ गये।" कामरान बेग ने इस्मत बेगम की हां-में-हां मिलाया।

"ये जानते हुए कि जंग से घरेलू के साथ-साथ दुनियावी, आर्थिक, राजनैतिक, सामरिक आदि मोर्चों पर तमाम तरह की दुश्वारियां पैदा होने लगती हैं, फिर भी कुछ शक्तियां जंग पर आमादा हैं, तो ये हम इंसानों के लिए निश्चय ही गम्भीर और चिन्ताजनक बात है।" इस्मत बेगम ने टी.वी. की तरफ से बिना नजर घुमाए ही कहा। टी. वी. के सामने बैठे सबा के अम्मी और अब्बू के चेहरे पर खिंची हुई, भय और चिन्ता की लकीरें साफ-साफ देखी जा सकतीं थीं।

"अल्लाह तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम...सबको सन्मति दे भगवान..." वे दोनों अपनी बच्ची, सबा और युद्ध में फंसे वतन वापसी की बाट जोहते बच्चों और उनके परिवारीजनों के बारे में सोचते-विचारते, बहस-मुब्तिला थे कि उनके फोन की सिंगटोन बजी। सबा का फोन आया था।

"हल्लो! हां बेटा, हम अभी तुम्हारे बारे में भी बातें कर रहे थे। हमें तुम्हारी खैरियत की बड़ी फिक्र है। तुम कब तक आ रही हो? अभी तुम कैसी हो, और तुम्हारी दोस्त सोनिया के क्या हालचाल हैं? तुम लोगों की खोज-खबर वास्ते तुम्हारे अब्बू पिछले तीन दिन से लगातार फोन मिला रहे हैं, लेकिन तुम्हारा फोन ही नहीं लग रहा। कोई चिन्ता वाली बात तो नहीं है न?" हाथ में फोन लेते ही सबा की अम्मी ने ताबड़तोड़ ये प्रश्न कर डाले।

"अम्मी, यहां तो हर तरफ तबाही

मची है। किसी के बच्चे घायल हैं, तो किसी के मां-बाप। लोगों को लगातार सुरक्षित जगहों पर ले जाया जा रहा है। हम सभी को एक-दूसरे के मदद की दरकार है। ऐसे में हम अपने दोस्तों को यहां अकेले छोड़कर वापस वतन नहीं आ सकते। यह इंसानियत का तकाजा भी तो नहीं। अगर हम और सोनिया इस देश में उच्च शिक्षा के लिए साथ-साथ आये थे, तो लौटेंगे भी साथ-साथ ही।"

"लेकिन बेटा, तुम तो जानती हो, तुम्हारे अब्बू दिल के मरीज हैं। हमें बड़ी चिन्ता हो रही है। ये इन्सान इतना जालिम क्यों हो जाता है? मासूमों के कत्ल से वो पता नहीं क्या हासिल करना चाहता है?"

"अम्मी, हमारी चिन्ता मत कीजिए। फिर, यहां और भी मुल्कों के लोग रह रहे हैं। दूसरे मुल्कों के बच्चे भी यहां रह कर पढाई कऱ रहे हैं। जंग की अफरा-तफरी जरूर है, लेकिन हालात अभी उतने बुरे नहीं हैं। यहां की सरकार हमें जरूरी चीजें मुहैय्या करा रही है। फिर अपने देश की सरकार भी तो हमें यहां से सकुशल निकालने में लगातार मदद कर रही है। हमारे खाने-पीने की व्यवस्था भी ठीक है। अभी हमारे पास पर्याप्त पैसे हैं। अपने देश की सरकार के साथ-साथ दूसरे देशों की सरकारें भी अपने लोगों की सुरक्षित वतन वापसी के लिए-जोर-शोर से इन्तजाम में लगी हैं।"

"बेटा, यहां तो टी. वी. में, अखबारों में जंग से जुड़ी जो तस्वीरें आ रही हैं, वो तो बेहद हौलनाक हैं। टूटी सड़कें, टूटे रेलवे ट्रैक, पुल, ध्वस्त इमारतें, अस्पतालों में घायलों की उमड़ती भींड़, अपने सामने सब कुछ उजड़ते देख रोते-बिलखते लोग। अपने ही मुल्क में शरणार्थियों की तरह सिर छुपाने की जगह तलाशते, दौड़ते-भागते लोगों की तस्वीरें देखकर दिल बैठा जा रहा है। समझ में नहीं आ रहा कि इन्सान इतना बेबर्द, स्वार्थी और एक-दूसरे के खून का प्यासा क्यों होता जा रहा है? हुकूमतों की आपसी तनातनी में हमेशा निरीह जनता ही पिसती है। पता नहीं इस खूबसूरत दुनिया को किसकी नजर लग गयी है?"

"अम्मी, अभी तो ऊपर वाले से यही दुआ करो कि किसी सूरत सीज-फायर हो जाये, ताकि जंग में फंसे मासूमों की जान-

माल की सुरक्षा हो सके और दूसरे देशों के नागरिकों की भी सुरक्षा हो सके। विदेशी नागरिकों, छात्रों की सुरक्षित वतन वापसी सुनिश्चित हो सके। वैसे हम अभी जहां हैं, यहां हालात जरूर तनावपूर्ण है, लेकिन हम अभी पूरी तरह सुरक्षित हैं।" सबा ने अपनी अम्मी को सांत्वना देना चाहा।

"टी. वी. में बचाव-दल के लोगों, वाहनों की इधर-उधर भागमभाग, चहुंओर गूंजती साॅयरन की चीखें, लोगों की चीत्कार, जगह-जगह बिखरे शवों को देखकर मन शोक, क्षुब्ध और बड़ी आशंकाओं से भर उठा है। पता नहीं ये कत्लो-गारत कब बन्द होगा?" सबा की अम्मी अभी भी खुद पर काबू नहीं रख पा रहीं थीं।

"अच्छा, अम्मी फोन रखती हूँ, कोई दरवाजा खटखटा रहा है। शाम को इत्मिनान से बातें होंगी। खुदाहाफिज।"

"अपना खयाल रखना, मेरी बच्ची। खुदाहाफिज।"

टेलीफोन पर अभी-अभी सबा और उसकी अम्मी की बातचीत हुई थी। उनके बीच युद्ध के इस हौलनाक मंजर की बातचीत से पहले के हालात पर आइये एक नजर डाल लेते हैं।

सबा और सोनिया ने मैट्रिक से हॉयर -सेकेण्ड्री तक की पढ़ाई एक साथ ही की थी। इनके माता-पिता ने अपनी बच्चियों की इच्छा को देखते हुए इन्हें उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजा था। इन दोनों की पढ़ाई विदेश में अच्छी तरह से चल रही थी कि अचानक ही उस देश और पड़ोसी देश में युद्ध छिड़ गया। दोनों देशों के बीच छिड़े इस असमय के युद्ध में जान-माल का नुकसान तो हुआ ही, अचानक छिड़े इस युद्ध के कारण, अफरा-तफरी में इन युद्धरत देशों में रह रहे बाहरी मुल्कों के नागरिकों को अपने वतन वापसी में भी ढ़ेरों मुश्किलात दरपेश आने लगीं।

टी. वी. और सोशल-मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्मस् पर युद्ध की खबरों, वहां के हालात को देखते, सबा और सोनिया के मां-बाप भी, उनसे लगातार सम्पर्क में रहते, उनकी सुरक्षित वतन वापसी के प्रयास में जुट गये थे। एम्बैसी से सम्पर्क करने पर यही पता चला कि युद्ध की इस नाजुक घड़ी

में कुछ भी कहना संभव नहीं है। हालात नॉर्मल होते ही जरूर कुछ इन्तजाम होंगे। अभी तो किसी भी विपरीत स्थिति से निबटने वास्ते, सभी देशी-विदेशी नागरिकों को भोजन-पानी सहित सुरक्षित स्थानों, बेसमेंट, भूमिगत रेलवे, मेट्रो-स्टेशनों, बंकरों आदि में ही छुपे रहने के आदेश दिये गये हैं। युद्ध की अफरा-तफरी में हवाई मार्गों पर प्रतिबन्ध होने के कारण हाल-फिलहाल किसी भी हालत में विमान-यात्रा संभव नहीं थी।

इस असमय के छिड़े युद्ध से नागरिकों की जिन्दगी जिस तरह बेहाल हो गयी थी, उनके बारे में वहां रह रहे लोग ही जान रहे थे। रह-रह कर साॅयरन बजने से भय और बमबारी से हुई तबाही का मंजर चतुर्दिक पसरा हुआ था। जरूरी चीजों के दाम तो बेइंतिहा बढ़े ही हुए थे, बिजली-पानी-दवाओं-भोजन सामग्री आदि के लिए तमाम तरह की गम्भीर मुश्किलें भी पैदा हो गयीं थीं।

सबा से बातें करने के बाद उसकी अम्मी हैरान-परेशान सी कभी घर के अंदर तो कभी बाहर सड़क पर निकल जातीं। अड़ोस-पड़ोस के लोगों से अपना दर्द साझा करतीं तो लोग उन्हें समझाते-बुझाते, सांत्वना भी देते। घर के अंदर टी.वी. पर आ रही युद्ध की खबरें उन्हें रह-रह कर डरा रहीं थीं। उन्हें यूँ बेचैन देखकर सबा के अब्बू ने टी.वी बन्द कर दिया। उसकी अम्मी ने अब सबा के स्टडी-रूम का रूख किया। सबा के स्टडी-रूम में घुसते ही, सबा से जुड़ी चीजें देखते उन्हें सबा की बेतरह याद आने लगीं। उनके जेहन में सबा के बचपन की यादें किसी फिल्म के रील की तरह घूम गयीं। कमरे की निस्तब्धता तोड़ती, वहां मौजूद सभी चीजें मानो सबा के बारे में चीख-चीखकर सब कुछ याद दिला रहीं थीं।

सबा जब छोटी बच्ची थी, उसके स्कूल जाने की तैयारी के दौरान उसकी शैतानियां, अपनी सहेली, अपनी मैम के बारे में तुतलाती जबान में बताने को उसकी ढ़ेरों बातें, सिर में हेयर-बैण्ड, रिबन बांधने, नेल-पॉलिश लगवाने की जिद। नाश्ता करने या दूध पीने में ना-नुकर। स्कूल-ड्रेस, जूते, पहनते समय के ढ़ेरों नखरे। स्कूल से लौटने के बाद होम-वर्क आदि पूरा करने में उसके द्वारा की जाने वाली हीला-हवाली।

टिफिन-बैग, जूते, यूनिफार्मस् को घर में जहां-तहां फेंक देने की आदतें। यके-बाद-दीगरे, ये सभी बातें उन्हें बड़ी शिद्दत से याद आ रहीं थीं।

दूसरे कमरे में सबा की और भी चीजें, जैसे...जूनियर से हॉयर-सेकेण्ड्री तक के उसके स्कूल-ड्रेस, स्टील का टिफिन-बॉक्स, सबा के पन्द्रहवें बर्थ-डे पर खरीदी गयी उसकी पसंदीदा ड्रेस, उसके मामू द्वारा गिफ्ट में दिये गये दोनों स्कूल-बैग, साथ ही मुबारक मौकों पर खींची गयी फ्रेम कराकर, कमरे की दीवालों से टंगी ढ़ेरों यादगार तस्वीरों के साथ ही उच्च-शिक्षा के लिए विदेश जाते समय उसके अब्बू द्वारा एयरपोर्ट पर ली गयी तस्वीरें देखते, अनजान आशंकाओं से घिरी, सबा की खैरियत के बारे में सोचते-विचारते उनका कलेजा मुंह को आ जाता। अब जब तक सबा की सुरक्षित वतन वापसी नहीं हो जाती, उन्हें सबा से जुड़ी इन्हीं चीजों, यादों का सहारा था।

अब आगे...।

सबा और सोनिया जहां रहते थे, उस मकान पर पिछली रात एक बम गिरने के कारण सोनिया को तो हल्की चोटें आयीं, लेकिन सबा गम्भीर रुप से घायल हो गयी थी। उसे अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उसकी हालत बद से बदतर होती जा रही थी। इसी वजह से पिछले दिनों सोनिया ने भी अपने मां-बाप से अपनी सहेली की खातिर युद्धरत देश में ही रुकने पर जोर दिया था।

दिन-ब-दिन सेहत गिरने व इस बीच अम्मी से टेलीफोन पर सम्पर्क न हो सकने के कारण सबा ने पिछली रात मोबाइल पर अपनी अम्मी के नाम एक संदेश रिकॉर्ड किया था। अत्यधिक रक्तश्राव के कारण अगली सुबह वह बेड पर मृत पायी गयी थी।

चूंकि युद्धों से किसी का भला नहीं होने वाला था। अतः अंततः...जान-माल की हो रही व्यापक क्षति को देखते हुए युद्धरत देशों ने अपनी जिम्मेदारी समझते, विवेक का परिचय देते एवं युद्ध विरोधी राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों की मध्यस्थता के जरिये उनके बीच सुलह-समझौते हो जाने और हालात ठीक होने के

बाद सोनिया जब अपने वतन वापस आयी तो उसके साथ सबा नहीं थी। एक बड़े और दो छोटे बैग्स में सबा के कुछ जरूरी सामान, जो सोनिया अपने साथ ले आयी थी, उसने उसके अम्मी, अब्बू को सौंप दिया। सबा के अम्मी, अब्बू के लिए अपनी इकलौती संतान को खो देना किसी हौलनाक हादसे से कम नहीं था। उनकी तो हंसती-खेलती दुनिया ही उजड़ गयी थी।

सबा के अब्बू-अम्मी होश गंवाए, गुम -शुम से हफ्तों बदहवासी के आलम में जीते रहे। सोनिया और उसके मम्मी-पापा भी सबा के अम्मी-अब्बू से मिलकर उनके साथ बैठते, हौसला दिलाते, बोलते-बतियाते उनका दुःख साझा करना चाहते थे, लेकिन सबा के घर के गमगीन माहौल को देखते वे निःसहाय, निरूपाय से चुप रह जाते। बहरहाल, वक्त हर जख्म भर देता है।

सबा की अम्मी की तबियत कुछ संभली तो सोनिया ने अपने मम्मी-पापा के साथ सबा के घर जाकर उनसे मुलाकात में उन्हें दिलासा देते, युद्ध की घटनाओं, दृश्य, परिदृश्य के बारे में विस्तार से बताया, और यह भी कि उसने और सबा ने किस तरह से विपरीत परिस्थितियों में भी हौसले बनाये रखते उस कठिन दौर का कैसे सामना किया था? जिन्हें सुनते सबा के अब्बू-अम्मी एक बार फिर से व्यग्र हो उठे। सबा के अब्बू-अम्मी की यूँ भाव-विह्वल दशा देख, सोनिया को भी सबा की बेतरह याद आने लगी। सबा के साथ विश्वविद्यालय में बिताए गये पल, शहर में पॉर्क-रेस्त्रां में घूमने के पलों की यादें अब सिर्फ तस्वीरों में ही रह गयीं थीं। अचानक ही जैसे उसे कुछ याद आया हो...“आंटी मैं क्या सबा के मोबाॅयल-फोन को देख सकती हूँ? उसमें सबा संग खींची गयी कुछ यादगार तस्वीरें अपने मोबाइल-फोन में साझा करना चाहती हूँ।” सोनिया ने संकुचाते-संकुचाते सबा की अम्मी से अपनी इच्छा जतायी। “देख लो बेटा, उसके बैग में ही रखा होगा। हमने तो अभी उसके बैग्स भी नहीं खोले। खामखाह, ही उसकी चीजों को देखकर सबा की अम्मी का दिल और भारी होगा।” सबा के अब्बू ने बीच में ही टोकते, उदास और लगभग कातर स्वर में सोनिया से कहा था। “आंटी! ये देखिये। सुनिये। अस्पताल में एडमिट रहने के दौरान सबा ने अपने

मोबाइल-फोन में ये मैसेज भी रिकॉर्ड किया है...जरा सुनिये तो...?'' सोनिया ने सबा के बैग से उसका मो्बाइल-फोन निकालकर अपने मोबाइल-फोन में कुछ तस्वीरें साझा करते समय एक मैसेज सुनकर, विस्मित स्वर में उसकी अम्मी को आवाज दी।

''मेरी बच्ची-मेरी बच्ची...जरा सुनाओ तो...?'' सबा की अम्मी, अपने माथे का पसीना पोंछते, दौड़ते हुए सोनिया के पास आयीं, और सोनिया के हाथ से मोबाॅयल-फोन लगभग छीनते हुए उससे वो मैसेज सुनाने को कहा। सोनिया ने अपनी अम्मी के नाम भेजा गया, सबा का उसके मोबाइल-फोन में रिकॉर्डड यह संदेश सुनाया, जिसे सुनते हुए वहां मौजूद सभी की आंखो में भर-भर आंसू आ गये...।

''...ये दुनिया बहुत खूबसूरत है अम्मी....बस्स, चन्द युद्धोन्मादी ताकतें हैं, जो अपनी जिद, बेवजह की महत्वाकांक्षाओं के कारण इसे बदसूरत बनाने पर आमादा हैं। इंसानी वजूद भी तभी कायम रह सकेगा, जब दुनिया के गोशे-गोशे से जंग विरोधी आवाजें आयेंगी। जंग से प्रभावित जाने कितने ही बेकसूर इंसान, असमय ही काल के गाल में समां गये। वर्षों की उनकी बसी-बसाई दुनिया उजड़ गयी और वे आस-पड़ोस के मुल्कों में शरणार्थियों का सा जीवन जीने को मजबूर हो गये। ऐसी बिन बुलाई आपदाओं की वजह से अब तक जाने कितने ही लोग जलावतनी के शिकार होते या दर-बदर से भटकने के लिए मजबूर हो गये। जंग की कीमत किन्हें और किस रूप में चुकानी पड़ती है, ये युद्धोन्मादी क्या जाने? कहा भी जाता है कि जीवन उतना कठिन नहीं है, जितना हम इंसानों ने इसे दुरूह बना दिया है। जंग के खौफनाक दृश्य बरबादी की जो कहानी कह रहे हैं, जो तस्वीरें आ रही हैं, वो अत्यन्त भयावह परिदृश्य की गवाह हैं, और परेशान करने वाली हैं। यहां मची तबाही के मंजर, खून-खराबे, लूट-मार को देखते साफ लग रहा है कि अब तुमसे, अब्बू से मिलना शायद सम्भव न हो सके। हो सकता है कि तुम्हें मेरी आवाज आखिरी बार सुनने को मिले। अम्मी, मेरी गैरहाजिरी में जब भी मेरी याद आये, आसमान में चमकते, झिलमिलाते सितारों की ओर देखना। तुम मुझे वहीं

पाओगी। दुआ करो कि ऐसे विपरीत हालात जल्द-से-जल्द नॉर्मल हो जायें। जिन्दगी की गाड़ी एक बार फिर से अपनी पटरी पर लौट आये...आमीन।''

इस रिकॉर्डेड संदेश को सुनने के बाद सबा की अम्मी, अब्बू के सब्र का बांध मानो टूटने सा लगा था। सबा की यह आवाज अब उसके अब्बू-अम्मी के लिए धरोहर सरीखी हो गयी थी।

सोनिया के मम्मी-पापा ने आगे बढ़कर उन्हें गले लगाते, ढ़ाढ़स बंधाया। सबा के अम्मी, अब्बू सबा के बारे में सोनिया से देर रात तक ढ़ेरों बातें पूछने-जानने की कोशिश में मानो खुद को दिलासा देते रहे। इन सब में रात का तीसरा प्रहर कब बीत गया, पता ही नहीं चला। उनकी आंखों के आंसू मानो सूख गये थे। माहौल में एक वक्फा सा छा गया। कुछ सोचते, सबा की अम्मी ने उठना चाहा तो सोनिया ने आगे बढ़कर उन्हें सहारा दिया। मुख्य द्वार हौले से खोलते हुए सबा की अम्मी दालान की तरफ निकल आयीं। कलेजे पर हाथ रखते, उन्होंने क्षितिज की ओर देखा। पूरब की तरफ से हल्की लालिमा सी फूटने लगी थी। ऊपर आसमान में एक सितारा कुछ ज्यादा ही चमकता सा दिखा। मानो खिलखिला रहा हो।.....'अम्मी! मैं यहां हूँ...ध्यान से देखो, तुम्हारी सबा...।' जैसे उनके कानों में सबा ने फुसफुसाते हुए कहा हो। आंखों में छलक आये अपने आंसू पोंछते, सबा की अम्मी ने आसमान की तरफ देखते हुए बिटिया के लिए दुआ की। सचमुच! सबा तो जैसे अब उनके लिए 'सबाऊन' (सुबह की पहली किरण) में तब्दील हो चुकी थी।